B.A. Part-II Music

प्र० - कुछ पारिभाषिक शब्द

1) कलावन्त - आज से कुछ समय पूर्व शास्त्रीय संगीत-जगत में ध्रुपद का ही प्रचार था और ख्याल-ठुमरी का जन्म तक नहीं हुआ था। स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजुबावरा आदि प्राचीन संगीतज्ञ ध्रुपद ही गाते थे। प्राचीन काल में कुशल ध्रुपद गायकों को कलावन्त कहा जाता था।

2) बानी - ध्रुपद गायन-शैलियां पाँच थी, जिन्हें गीति कहते थे। गायन-शैलियों के आधार पर ध्रुपद-गायकों की विभिन्न बानियाँ बनी। अतः बानी से गायन-शैली का बोध होता है। नीचे बानी के प्रकारों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

i) खंडारी बानी - कहते हैं अकबर बादशाह के दरबारी संगीतज्ञ बीनकार सम्मोखन सिंह (नौबत खाँ) इस बानी के जन्मदाता थे। वे खंडार नामक गाँव में रहते थे, इसलिए उनकी गायन शैली खंडारी कहलाई।

ii) डागुर बानी - डागुर बानी स्वामी हरिदास जी द्वारा आरम्भ मानी जाती है। जियाउद्दीन खाँ, अल्ला बन्दे खाँ, नसीरुद्दीन खाँ आदि डागुर बानी के गायक कहलाये। कुछ लोगों का विचार है कि अकबर बादशाह के दरबार में बृजचंद ने डागुर बानी की स्थापना की क्योंकि वे डागुर नामक स्थान के रहनेवाले थे।

Scanned with CamScanner

iii) नौहारी बानी - इस बानी के प्रवर्तक सुजानदास जो हाजी सुजान खाँ के नाम से प्रसिद्ध हुए, माने जाते हैं। कहते हैं कि हाजी सुजान खाँ तानसेन के दामाद थे। बशीर खाँ, मुहम्मद खाँ, विलायत हुसैन खाँ आदि गायक इस बानी के कलाकार थे। वे राजपूत थे तथा नौहारी गाँव में रहते थे। इसलिए उनकी बानी (शैली) का नाम नौहारी पड़ा

iv) गोबरहारी बानी - इस बानी के प्रवर्तक तानसेन माने जाते हैं। उनकी शैली गौड़ी अथवा गोबरहारी कहलाई। परन्तु लोगों का विचार है कि इस बानी की स्थापना कुम्भनदास के वंशजों ने की जिनके मतानुसार तानसेन की गायन-शैली सोनिया बानी कहलाई।

इनमें से कुछ तो उपर्युक्त बानियों की शाखायें हैं, जैसे - डागुर बानी की बनारसी शाखा आदि

Scanned with CamScanner